International Journal of Applied Research 2019; 5(10): 348-350

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(10): 348-350
www.allresearchjournal.com
Received: 21-08-2019
Accepted: 26-09-2019

सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

वर्तमान परिस्थितिक यथार्थ चित्राण 'समकालीन नाटक'

सोनू कुमार झा

प्रस्तावना

एकटा समय छल जहिया खिस्सा कहबाक–सुनबाक चलनसारि छलै। घरक बूढ़–पुरान लोकसभ नेना–भुटकाकेँ खिस्सा सुनबैत छल, घूरतर हो कि आँगनमे। खिस्सा विषय रहित छलμ राजा–रानी, शीत–बसन्त, बगियावाला आकि गरीब ब्राह्मणक ई कथा सभ मौखिक रूपे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि हस्तान्तरित होइत छल। कालक्रमे वएह खिस्सा सभ कागत पर उतरय लागल आ परिमार्जित रूपेँ लिखाय लागल।

आधुनिक कालमे एहि दिस विशेष ध्यान देल गेल। समाजमे व्याप्त कुरीति, अंधविश्वास मैथिली कथामे आबऽ लागल। धीरे–धीरे ओहूसँ आगू बढ़ल मैथिली कथा। तखन ओहिमे समाहित भेल भूख, भ्रष्टाचार, आन्दोलन।

वर्तमान समयमे जखन समुच्चा विश्व एकटा गाम भऽ गेल अछि, एहन वैश्विक समयमे आबिकऽ मैथिली कथाक परिधि सेहो विस्तृत भऽ जाइत अछि। आ तखन कथाकार लोकनिक जिम्मेवारी सेहो बढ़ि जाइत छनि। समुच्चा विश्वमे घटि रहल घटना कथाकारक ध्यान आकृष्ट करैत छनि। एहने एकटा कथाकार छथिμ रमेश।

हिनक 'समकालीन नाटक' नामक कथा–संग्रह हालहिमे प्रकाशित भेलनि अछि। जाहिमे ई सरकारी तंत्रामे पसरल भ्रष्टाचार, आदिवासीक समस्या, नारी–सशक्तिकरण आदि समस्याकेँ इंगित करैत छथि। एक सय छियानबे पृष्ठक एहि संग्रहमे पंद्रह गोट कथा अछि। जाहिमे एकगोट कथा अछि 'सड़क डिभाइडर'। एहि कथामे वर्तमानमे जे राजनीतिक परिदृश्य अछि ताहि पर नीक चोट कएल गेल अछि। गामक नाम पर जे घिनौन राजनीति भऽ रहल अछि तकर स्पष्ट चित्रा खिचैत अछिμ सड़क डिभाइडर। जो रक्षाक नाम पर कोनो व्यक्तिक हत्या करब कतेक उचित अछि? जानवरक लेल मनुखक जान लेब की उचित अछि? आ जाहि जानवरक लेल मनुष्यक जान लेल जाइत अछि, तकर स्थिति की अछि? तकर स्थिति अछि जे आइ कतहु कोनो गोशालाक स्थिति ठीक नहि छैक। मुदा ओकरा नाम पर राजनीति चमकि रहल अछि। गामक नाम पर अफवाह पसारिकऽ राजनेता लोकनि अपन राजनीति चमकयबामे सफल छथि। वएह सभ एकटा एहव डिलाइनर छीयैत छथि, जकर एहि पार ओहि पारक लोक एक दोसरक प्राण लेबाक लेल विर्त रहैत अछि। आवश्यकता अछि एहि सम्प्रदायिक डिभाइडरकेँ समाप्त होयब। जाहिसँ समाजमे समरसता
आओत। समुचा देश मे जे जतहि अछि, ओतहि हँसोथि लेमय चाहैत अछि। भ्रष्टाचार एहि देशमे कोन तरहेँ परसल अछि से एहि कथाक निम्न पँतिक स्पष्ट भऽ जाइत अछिμकुल्लय तीस गायकेँ बदला, एक सय तीस गायकेँ आवटन मंगाबैत छथि' [1]

जाहि व्यक्तिमे पुरुषार्थ नहि हो, ओ पुरुष नहि अछि। कोनो गलत बातकेँ चुपचाप सहि लेब गलत थिक। से चाहे लिंग कोनो हो। कोनो व्यक्तिक लिंग निर्णाय ओकर कर्मसँ होइत अछि। लिंग निर्णाय कथामे एकरा नीक जकाँ वार्णित कएल गेल अछि। एहि कथामे देखाओल गेल अछि जे रेलगाड़ीसँ यात्राा करबाक क्रममे पैसेंजरकेँ किन्नर सभ कोन तरहेँ लुटैत अछि। किन्नरक भेष–भुषा धेने परुष आ महिला सेहो एहि धंधामे लुप्त भऽ गेल अछि। तखन फेर इ खेल किएक भऽ रहल अछि। आबि तँ ओ सभ एम. पी, एम. एल भऽ गेल अछि। तखन ओ सभ आब दया पात्रा कोना भऽ सकैत अछि। मुदा ओ सभ ओ सभ ट्रेनमे यात्राीक संग जे अभद्रता पूर्ण व्यवहार करैत अछि ओ असहनीय होइत अछि। खासक जखन लोग अपन परिवार संग रहैत अछि। तखन कियो ओकर विरोध ने कऽ पबैत अछि। पुरुषक पुरुषार्थ खतम भऽ गेल रहैत छनि एखन हम किनसियाइत पुलिंग जकाँ नहि छी। भरिसक सर्मिसिया होइत छै, भरिसक।'' [2] वास्तवमे लोक अपने लाजक डरे ओकरा सभकेँ किछु नहि कहैत छैक। ओकरा सभक विजनेस फरैत–फुलाइत रहैत छैक जखन की जरूरी नहि जे ओहि किन्नरक भीरमे सभ किन्नर रहैत अछि। ओहि विजनेशमे असली मर्द सभ सेहो किन्नरक भेष धेने कारोबार करैत अछिμ'असलमे किन्नर केवल बलिगोबनाक बना धेने छल। ओ वस्तुतः मर्दाना अंगबला जन्मना–मर्द छल।' [3] असलमे लिंग निर्णाय ककरो कर्मसँ होइत अछि।

जे अन्यायक विरुद्ध अवाज उठबैत अछि वसरूतवमे वयह पुलिंग अछि अन्यथा नपुंसकलिंग एहि बातकेँ लिंग निर्णाय स्वष्ट करैत अछि।

आइयो बेटी कतहु सुरक्षित नहि अछि। नोकड़ी–पेशामे हो, आ की स्कूल–कॉलेजमे पढ़ैत हो, वा अपन घरमे किएक ने सूतल हो। ओ कतहु स्वतंत्रा भऽ कऽ नहि रहि सकैत अछि। सभठाम ओकर मोन एकटा अज्ञात आशंकासँ छनगल रहैत छैक। ओकरा सभ पुरुषक आँखि एके संगे लाल टरेस देखाइत छैक। वर्तमान समयमे जे सामाजिक परिदृश्य अछि, तकर स्पष्ट रेखा चित्रा खिचैत अछि 'लाल टरेस आँखि'। ब्रह्म सत्य अछि जे पुरुष जखन कोनो नारी दिस देखैत अछि, तँ ओकर नजरि पिछरिकऽ नारीक छातीये पर खसैत छैक। जकर विरोध कोनो लड़की वा नारी मुखार भऽ कऽ नहि कऽ पबैत छैक। एहि कथामे महादलित टोलाक एकटा लड़की सीता सरदारक कथा अछि। जकर बाप ताड़ी बेचैत छैक। मुदा कहियो ओ अपन बेटीकेँ दोकान पर नहि बैसऽ दैत अछि। अपन बहु–बेटीक इज्जति सरेआम निलाम नहि होमय देबय चाहैत अछि। मुदा तैयो कहाँ बच्चैत छैक ओकर बेटीक इज्जति। ओहि ठामक ऐमेले अण्डू बहरदार ओकर इज्जतिकेँ गदकिचीन कइये देललैµ''सीता सरदार भनसा कऽ फटक बला केवाड़ी बन्दकऽ सुतियो रहल रहय।...लाल टरेस आँखि बला बनैया सुग्गर जकाँ टुल्लसँ घरमे पैसलै...सीता सरदार चिन्ह गेल। बनैया सुग्गर दुइये मिनटमे ओकर मुँह पर काजर सन कारी पोतिए देलकै।'' [4] कथाक ई पोति वास्तवमे समाजक मुँह पर कारीख पोतैत अछि। आइ सरकारक संग–संग जनता सेहो कंठ फाड़ि–फड़ि कऽ चिचिया–चिचियाकऽ कहैत अछि जे नारीकेँ समान अधिकार देल जा रहल अछि। से सभ क्षेत्रामे। मुदा वास्तविकता तँ किछु औरे अछि। आइ भनहि अपन प्रतिभाक बल पर बेटी सभ क्षेत्रामे आबि गेल हो। मुदा ओकरा लेल बुनियादी सुविधा तककेँ अभाव रहैत अछि। एहि कथामे सीता सरदार अपन प्रतिभासँ ट्राफिक पुलीसक नोकड़ी लऽ तऽ लैत अछि। लेकिन सरकार स्थिति ई अछि जे ओ जे हल्ला हैत तकर जगह ने छैक कतहु ओकर ड्यूटिक जगह पर। ओकर की स्थिती होइत अछि से एहि वाक्यसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछिµ''मुदा आठ घंटाक पक्का ड्यूटि कएलाक उपरान्त, नौ बजैत–बजैत ओकर पेट आ पेरु फुलिकऽ डम्फा भऽ जाइत छलै। किएक तँ कोनो चौराहा पर शौचालय–मुत्रालय नहि बनल छलै।'' [5] इयह अछि हमर विकसित देशक चित्रा। जकरा हमरा सभक सोझा अनबाक प्रयास लेख कएलनि अछि।

एकरा सभक बीच हमरा समाजक भीतर एकटा सकारात्मक बदलाव सेहो भऽ रहल अछि। आब हमर समाजक बेटी पुतोहु आत्म–निर्भर भऽ रहल छथि। रोजगारमे तँ सहजे। आब आत्म रक्षाक सेहो। एहि कथाक पात्रा सीता सरदार तकर सजीव उदाहरण अछि।

एहि कथामे किछु एहनो बात अछि जे प्रयोग स्तर पर सत्य नहि अछि। तेँ हमरा अरघल नहि जेना कथामे जखन सीता सरदार काहिये ऐयेले के कुकर्मक सबूत ओकर कटल अंग पन्नीमे लपेटल देखबैत अछि। कारण हमर देशक न्याय प्रक्रिया एतेक तेज गतिसँ तँ काज करैत नहि अछि। राति घटना भेल भोरे कोर्टमे हाजि। ताहुमे ऐमेलेकेँ मामला। ओहिमे तँ मासक–मास लागि जेतैक। तखन एतेक दिन तक कटल गुप्तांग कोना रहि सकैत अछि। दोसर जखन ऐमेले सीता सरदारक मुँह पर कारिख पोति देलनै। आ सीता ओकर अंग कहि नपुंसक बना देलकै। ताहिसन दुनूमे झुरमुठ नहि भेलै। भेलै हेतै। तकरा देखाएब सेहो जरूरी छल।

मुस्लिम गाम–समाजक नीक चित्रा उकेड़ल गेल अछि कथा 'सुफियानामे'। धार्मिक कट्टरता, धार्मिक उन्माद एहि सम्प्रदायकेँ कोना कऽ भीतरे–भीतरे नाश करैत अछि। तकर नीक जकाँ वर्णन एहि कथामे भेल अछि। अशिक्षाक समाज पर कतेक गहींर प्रभाव परैत अछि से कहैत अछि ई कथा। एहि कथाक माध्यमे सँ देखाओल गेल अछि जे साँय–बौहक जे नितांत सेक्रेट गप्प होइत अछि ताहु पर मुल्ला–मौलवीक अधिकार रहैत अछि। वा कही जे मात्रा पुरुषक अधिकर। महिला तँ एकर विरोध करैत अछि। तेँ ने शाईदा कहैत अछिµ'ककरा कएकगो बच्चा होइहे, ई सभ प्राइभेट बात हइ! घर–परिवार, मियां–बीबीकेँ बीचकेँ! 'चिल्हाव बलाकेँ पैगम्बर साहेब के मजहबी संदेश के परचार करना हइ परिवार नियोजन आ मियाँ–बीबीकेँ मामले से का मतलब हइ?'' [6] आइयो मुस्लीम समाजमे परिवार नियोजन करायब धर्मक खिलाप अछि। से मात्रा धर्मक ठेकेदार लोकनि अपन बर्चस्व कायम रखबा लेल करैत अछि। एतेक धरि जे जतऽ मुस्लीम महिला सभ अपन बच्चाक नाम अल्लाह वा ओकर पैगम्बर नाम पर राखऽ चाहैत अछि, जे ओकरामे नीक संस्कार एतेक, ओ पढ़त, नीक बनते। मुदा मुफ्ती, मौलवी सभा बच्चाक नामकरण आतंकवादीक नाम पर करैत अछि।

कहल जाइत अछि जे नारी जँ कोनो बातकेँ ठानि लिए तऽ ओ काज हेबे करत। से बात एहु कथामे देखाओल गेल अछि। मुस्लीम समाजक महिलामे सेहो आब जागृति आबि रहल अछि। ओ आब धर्मक नाम पर अपन परिवार घोट राखऽ चाहैत अछि। टेबा–टेबी परिवार नियोजन करबितो अछि। से एहि कथामे शाईदा करबैत अछिµशाईदाकेँ तेसर बच्चाक जन्म भेलै, तँ नसबन्दीयो करेने आयल।'' [1]

मुस्लीम समाजमे परसरल अशिक्षा आ ताहि कारणे मौलवी सभक मनमानीकेँ देखबैत थीक कथा अछि 'सुफियाना'। एहि कथामे देखाओल गेल अछि जे कोनो ओहि समाजक बच्चाकेँ धर्मक नाम पर जेहादक भट्ठीमे झोंकि देल जायत अछि।

आइ चहुँ दिस अनघोल मचल अछि जे भ्रष्टाचार समाप्त कयल जाय। मुदा ई भ्रष्टाचार रूपी जीवाणु एहि तरहेँ एक–एक व्यक्तिकेँ संक्रमित कऽ देने अछि जे ओ कहियो सामाप्त नहि भऽ सकैत अछि। जे जतहि अछि ओतहि भ्रष्ट अछि। तकर सद्यः प्रमाण अछि कथा ''समकालिन नाटक अर्थात जीवाणु कीटाणु संक्रमण'' जे ईमानदार पदधिकारी अछि, तकरा सहीसँ चलऽ नहि दैत अछि नेता सभ। जाहियायसँ त्राी–स्तरीय पंचायती राज बनल अछि। तहियासँ आओर जेना लूट–खसोटक उजाहि उठि गेल अछि। एहि कथाकेँ पढ़बा काल लगैत अछि जे सत्रो ई घटना तँ काल्हि घटल रहै ब्लॉकमेµ''सुगिया देवी सोनबर्षाकेँ मुखियाइन अपन ब्लाउज फाड़िकेँ फँसा देलकै।'' [8] ई कोनो एक पंचायतक गप्प नहि रहै। जीतल प्रतिनीधि सभ अपनाकेँ बड़का हाकिम बुझऽ लागल। ओकर रोब एहव जे ओकरा बड़का–बड़का हाकिम सलामी दौक। कमिशन दौक। नहि तँ बस वयह रेप केस। नहि तँ मारि–पीटि तँ अवस्सेµअरे आइ अखबार रेगलो छै हो जिला–पार्षदकेँ अध्यक्षता सलमा खातुन डीडीसीकेँ चप्पल से पीटी देलकै।'' [9] सरकार द्वारा पंचायती राजमे महिलाकेँ आरक्षण देलक। महिला चुनाव लड़का। जितबो कएल। मुदा कुर्सी पर कब्जा पुरुषेक। असलमे ई प्रजातंत्रा पढ़ल लिखल लोक पर मुर्खक साशन तंत्रा भऽ कऽ रहि गेल अछि।

एहि कथाक नाम एकदम सटीक अछि समकालिन नाटक। एहि देशमे राजनेता लोकनिक नाटके तँ चलि रहल अछि। बेचारा निरीह जनता दर्शक बनि ओस चटैतम रहैत अछि। एहि कथामे कथाकार सभक नामकरण सेहो बेजोड़ ढ़ंगे केने छथि। जेना–एम.पी–मुखिया पति, एस.पी–सरपंच पति। आदि ई नाम सभ पढ़बा काल गुदगुदबैत अछि। मुदा ताहि संग–संग एहि कथाक शिर्षक लगैत अछि जेना दूटा अछि। कोनो एक कथाक दूटा शिर्षक अनकठनि सनक लगैत अछि। एहि कथाक शिर्षक 'सकालिन बाटक' सटिक अछि।

लगैत अछि जेना कथाकार किटाणु–जीवाणु संक्रमण जोड़ि देने होथि।

अर्तजातीय विवाह पर आधारित कथा अछि इन्द्रधनुष तरंगित। जाहिमे हिन्दू–मुस्लमानक प्रेम कथाकेँ देखाओल गेल अछि।

जाहिमे नायक हिन्दू अछि आ नायिका मुस्लमान। ई कथा दू भागमे चलैत अछि। कथाम पहिल भाग अर्थात पूर्व रागमे मिथिलामे व्याप्त गरीबीकेँ देखार कएल गेल अछि। एहि कथाक नायक वीर बहादुर सिंह अछि। ओकर घरक आर्थिक स्थिति दयनीय छैक। वीर बहादुर सिंह लम्बा चौड़ा तगड़ा जवान अछि। ओकर जवानी उठान पर छैक। ओ रोज अखारामे जाइत अछि। किएक तँ ओकरा सभम पैघ पहलमान बनबाक छैक। ताहि लेल ओकरा चाही कसगर भोजन माछ–माउस। से भेटैत नहि छलैक खुद्दी रोटी, नीक–मेरचाइ, अल्टुआ–दालि माँड़सटका–खिचरी...। [10] हलांकी मिथिलामे आब ओहन स्थिती नहि अछि।

एहि कथामे हिन्दू–मुस्लिम मजहबी एकताकेँ सेहो देखाओल गेल अछि। हिन्दू–मुस्लमानक दोस्तीक दस्तावेज जकाँ अछि ई कथा। जकर सुरुआत वीर बहादुर सिंहक स्कुली जीवनेसँ भऽ जाइत अछि। वीर बहादुर सिंहक स्कुली दोस्त अछि ईद मोहम्द। जे वीर बहादुरकेँ ईद–बकरीद आ शवेबरातमे लऽ जाइत अछि अपना ओहिठाम। वीर बहादुर खूब मोनसँ पेट भरि कऽ खाइत अछि सेहो दूनू दोस्त एके संगे।

होइत–हवाइत वीर बहादुर कहुना मैट्रीक पास करैत अछि। एक दिन ओकरा पता लगैत छै जे दानापुर कौन्टमे सेनाक बहाली छैक। ओ जाइत अछि। ओकर बहाली भऽ जाइत छैक ओकर पोस्टिंग होइत छैक काश्मीरमे। जे हिस्सा पाकिस्तानी सरल छैक। ओहि घाटीक गाम एहि कथामे थिक जकाँ चित्राण कयल गेल गेल अछि। एकरा पढ़लाक बाद ओहि आस पासक लोक कोना डरि–डरि कऽ जिबैत अछि से बुझबामे भाँगठ नहि रहैत अछि।

एहि कथा उत्तर कथा रोचक अछि। वीर बहादुर ओहिठाम एकटा मुस्लमान लड़की कचनारसँ विवाह कऽ लैत अछि आ ओकरा लऽ कऽ अपन नानी गाम चल अबैत अछि। हलांकि ओकर भाइ सभ गाममे नहि रह छैक तेँ नानीक घर आबि जाइत अछि। मुदा बीर बहादुरक माय ओकरे लग आबि जाइत छैक। आ वयह पुतोहु ओकरा अंतीम समर्थक काज दैत छैक।

अंतरजातीय प्रेम–विवाह पर आधारित नीक कथा उतरल अछि। मुदा एहिमे एकटा बात नहि पचैत अछि जे कचनारक माय जे कश्मीरी अछि। वीर बहादुरक माय जे मैथिलानी अछि। दुनू आपसमे फदका कोना करैत अछि। समुच्चा कथामे पहिने कतहु ओहि कश्मीरी महिलासँ बात नहीं भेल अछि।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे समकालीन नाटक' संग्रहक सभटा कथार रोचक अछि। कथाकार रमेश कथाक अनुसार पात्राक चयन आ ओकर बोली बनीकेँ दुबइ उतारने छनि। जे हिनक कथाक सफलता अछि। बीच–बीच लोकोक्ति सभक प्रयोग सेहो भेल अछि। ठेठ शब्द सभक प्रयोग केने छनि। से कथाकेँ आर सक्कत करैत अछि। हिनक कथा सभ नव स्वादक सृजन करैत अछि।

संदर्भ संकेत

1. 17
2. 34
3. 35
4. 39
5. 46
6. 67
7. 68
8. 75
9. 75
10. 119